❍ Year : 3 ❍ Issue : 11 ❍ January 2019 ❍ ISSN : 2456-0898

GLOBAL THOUGHT

ग्लोबल थॉट

(MULTI DISCIPLINE MULTI LANGUAGE RESEARCH JOURNAL)

(An International Refereed Quarterly Research Journal)

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

Special Note :

Anti national thoughts are not acceptable.

Patron :

Prof. M.M. Agrawal

(Former Dean, Arts Faculty & H.O.D. Sanskrit, University of Delhi, Delhi)

Prof. D.S. Chauhan

(Former H.O.D. Sanskrit, Magadh University, Bodhgaya, Bihar)

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, (नजदीक संकट मोचन मंदिर), पी.एस. नजफगढ़, दिल्ली से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4 ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली में मुद्रित।

सम्पादक-रूपेश कुमार चौहान

Ph. 09555222747, 9267944100, 9555666907

अनुक्रमणिका

Editorial ---------- 8

दलित साहित्य : हिन्दीत्तर भाषाओं का योगदान... 9
डॉ. पदमा राम परिहार

विवाह संस्कार में विनियुक्त मन्त्रों और तत्सम्बद्ध क्रियाओं के निहितार्थ और सन्देश..... 14
डॉ. सरस्वती

मूल्यों का संकट : 'समाधान हेतु उपागम' भारतीय संदर्भ में..... 20
डॉ. श्रीमती कैलाश गोयल

Gender equity in the self help organizations of and for the visually impaired-Prioritize Inclusion ----------24
Manjula Rath

वैदिक सृष्टि विज्ञान में जलतत्व (शतपथ ब्राह्मण के परिप्रेक्ष्य में)..... 27
डॉ. विजय गर्ग

अरस्तू का त्रासदी सिद्धांत..... 31
डॉ. अनिल कुमार सिंह

বাংলা শিশুসাহিত্যের গতি-প্রকৃতি 35
ড. অনির্বাণ সাহা*

आधुनिक जीवन में गीता की सार्थकता..... 39
डॉ. धनपति कश्यप

लोकतंत्र की चुनौतियां और मीडिया : समसामयिक संदर्भ..... 43
कुमार प्रशांत

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के काव्य-प्रतिमान..... 47
डॉ. रामेश्वर राय

लोकतंत्र की चुनौतियां और मीडिया : समसामयिक संदर्भ

कुमार प्रशांत

सार

हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था के समक्ष बहुत सारी चुनौतियां हैं कुछ सामान्य है तो कुछ विशेष। सामान्य श्रेणी की चुनौतियां वह हैं जो लगभग हर लोकतंत्र पुरानी या नई में पाई जाती हैं। विशेष श्रेणी की चुनौतियां वह हैं जो विशेष परिस्थिति में यानी विशेष सरकार के कालखंड में अवतरित होती हैं। दोनों प्रकार के चुनौतियों का लोकतंत्र के चारों स्तंभों विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा मीडिया से होता है। अपने-अपने तरीके से चारों स्तंभ इन चुनौतियों से निपटते हैं। इस लेख में उन तमाम चुनौतियों तथा उनसे निपटने के लिए चौथे स्तंभ मीडिया की भूमिका की चर्चा करेंगे।

मुख्य शब्द : मीडिया, लोकतंत्र, संघवाद, पारदर्शिता।

परिचय

अभी भी दुनिया के एक चौथाई भाग में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था कायम नहीं हो पाई है। हम सब भाग्यशाली हैं कि अपने यहां लोकतंत्र है। अपने देश के लोकतंत्र की जड़ें बहुत ही गहरी हैं। इसका इतिहास भी बहुत पुराना है। यह हमारी विरासत का हिस्सा है। अनेक झंझावातों को झेलकर और भी मजबूत हुआ है फिर भी बदलते हुए हालातों में उसे विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अभी भी इसके समक्ष कई चुनौतियां हैं। यह चुनौतियां हैं–गरीबी, अशिक्षा, संप्रदायवाद, सामाजिक, आर्थिक, असमानता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, हिंसा, भ्रष्टाचार इत्यादि। उपरोक्त प्रजातांत्रिक शासन की सामान्य मुश्किलें हैं जो मुश्किल हैं। गंभीर या विशेष वह हैं भीड़, हिंसा, राष्ट्रवाद बनाम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मेजॉरिटेरिएनिज्म सरकार बनाम लोकतंत्र और संघवाद बनाम कोऑपरेटिव संघवाद लोकतांत्रिक संस्थाओं का अवमूल्यन।

उपरोक्त दोनों प्रकार की चुनौतियों से जुड़ी भी कुछ चुनौतियां हैं जो लोकतंत्र के उद्‌भव से लेकर अनवरत तंत्र के साथ चलती रहती हैं। उदाहरण स्वरूप लोकतांत्रिक व्यवस्था और भी करीब जाने के लिए आवश्यक बुनियादी आधार बनाने की चुनौती गैर लोकतांत्रिक व्यवस्था को समाप्त करने। सत्ता पर से सेना का नियंत्रण खत्म करने लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था विस्तार करने। एक संप्रभु व कारगर शासन व्यवस्था स्थापित करने लोकतांत्रिक शासन की बुनियादी सिद्धांतों को सभी सामाजिक समूह तथा संस्थाओं में लागू करने संघ के सभी इकाइयों के बीच संघ के सिद्धांतों को व्यवहारिक स्तर पर लागू करवाने स्थानीय सरकारों को अधिकार संपन्न बनाने और अल्पसंख्यक एवं महिलाओं को शासन में उचित भागीदारी सुनिश्चित करवाने।

उपरोक्त चुनौतियों से यह स्पष्ट है कि अधिसंख्य स्थापित लोकतांत्रिक संस्थाओं के समक्ष एक खास चुनौती है जो उसके विस्तार की है। हम जिस अनुपात में लोकतांत्रिक मूल्यों एवं उसके अधिकारों का विस्तार करेंगे लोकतंत्र की जड़ें उतनी ही मजबूत होंगी तब तब बहुत कम ऐसी चीजें होंगी जो लोकतांत्रिक नियंत्रण के बाहर होंगी। यह मुश्किल है या चुनौती आज भी भारत और अमेरिका जैसे पुराने लोकतंत्र के गढ़ में देखा जा सकता है। इसके विस्तार के साथ-साथ उसकी मजबूती भी आवश्यक है इसका संबंध लोकतांत्रिक विवादों से है जब तक लोकतंत्र सभी कार्यों का व्यवहार लोकतांत्रिक होगा लोक की भागीदारी निश्चित रूप से बढ़ेगी लोकतंत्र मजबूत बनेगा ऐसा होने पर लोक से तंत्र की दूरी भी कम होगी

लोकतंत्र की खुशबू का एहसास लोग कर सकेंगे। इस संदर्भ में यह बताना आवश्यक है कि फैसले लेने के तरीके में पारदर्शिता तथा अमीर और देसी विदेशी निगम के प्रभाव से मुक्त करना होगा।

उस लोकतांत्रिक चुनौतियां जो खास में किसकी होती है वह सभी लोकतांत्रिक सरकारों में नहीं पाई जाती। इस श्रेणी की मुश्किलें सरकार जनित होती हैं। इसलिए इन चुनौतियों की शक्ल सरकार के स्वभाव उसके पार्टी हित वह चुनावी गणित के समीकरण पर निर्भर करता है। हां हम कुछ वैसी ही चुनौतियों की चर्चा करेंगे जिससे लोकतंत्र को बचाने में सहायक होता है।

भीड़ द्वारा हिंसा कुछ सामाजिक मुद्दों को लेकर जब एक समुदाय के लोग दूसरे समुदाय के सदस्यों को पीट-पीटकर हत्या कर देते हैं तब उसे बीड़ी हिंसा की संज्ञा दी जाती है। ऐसी घटनाएं हाल के वर्षों में देखने को मिली है। इसकी जड़ें में खास राजनीतिक पार्टी की क्षुद्र राजनीतिक रणनीति होती है जो अपने विचारधारा को लेकर ज्यादा प्रतिबद्ध होते हैं। इस तरह की स्थिति फिलहाल के कुछ वर्षों में ज्यादा ही देखने को मिल रही है जिससे हमारे लोकतंत्र के ऊपर देश के अंदर और बाहर से भी आलोचनाएं होती है। यह इधर के समय में सरकारों के लिए भी जो जनता के द्वारा चुनी हुई सरकार है और उनकी भागीदारी भी इसमें है और इस तरह का माहौल हमारी प्रजातंत्र के लिए एक खतरा है।

राष्ट्रवाद बनाम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमारे मौलिक अधिकारों का अहम् हिस्सा है। यह अधिकार मीडिया के अस्तित्व और लोकतंत्र की भावना के विस्तार के लिए आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है। लेकिन राष्ट्रवाद की आड़ में इस मौलिक अधिकार की महत्ता वह प्रभाव को मौजूदा सरकार द्वारा गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों की लगातार टिप्पणियों के बावजूद सरकार इस पर ध्यान देना आवश्यक नहीं समझ रहा ऐसा करना प्रजातंत्र के लिए आसन्न खतरे का संकेत देता है।

मेजॉरिटेरियन सरकार बनाम लोकतंत्र

मेजॉरिटेरियन सरकार एक मजबूत सरकार होती है सरकार को स्थायित्व प्रदान करती है। राष्ट्रहित व जनहित में कानून बनाने में सरकार को आसानी होती है। लेकिन अब यही सरकार जब कुछ ऐसे कानून बनाने में तत्परता दिखाती है जो लोकतांत्रिक भावनाओं को ठेस पहुंचाती है। इन कानूनों का असर नागरिकों के एक समूह के हित के विरुद्ध होता है ऐसी स्थिति में लोकतांत्रिक मूल्य खतरे में पड़ जाता है और सही मायने में यह मेजॉरिटेरियन सरकार के आचरण के विरुद्ध साबित होता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र के मजबूती के लिए तथा लोगों के मौलिक अधिकार जो संविधान प्रदत हैं उनका भी पतन होता है। अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों के अधिकारों पर सवालिया निशान खड़ा होता है बहुसंख्यक सरकारें लगातार हमारे देश में अल्पसंख्यकों के अधिकारों के प्रति ज्यादा ध्यान नहीं देती हैं। लोकतंत्र में अल्पसंख्यकों के अधिकारों सुरक्षा सरकारों द्वारा करना संविधान के प्रति निष्ठा परीक्षित होता है। हमारे संविधान में अल्पसंख्यकों के अधिकारों को लेकर विभिन्न प्रावधानों के द्वारा सुनिश्चित किया गया है। अगर अल्पसंख्यकों के अधिकारों को सुरक्षित करने में सरकारें विफल होती हैं तो विभाजनकारी शक्तियां इनका भरपूर फायदा उठाती हैं क्या हमारे संविधान बनाने वाले तथा आजादी की लड़ाई लड़ने वालों ने ऐसा सोचा था कि हमारे देश में अल्पसंख्यक सुरक्षित ना हो कतई नहीं।

संघवाद बनाम कोऑपरेटिव संघवाद

संघवाद का अभिप्राय ही होता है कि दो या दो से अधिक सरकारों संस्थाओं निकायों के बीच शक्तियों का उचित वितरण। सरकार संविधान के अनुसार अपने-अपने क्षेत्रों में कानून बनाकर उसे लागू करती है। लेकिन जब केंद्र सरकार बार-बार इस बात की दुहाई देती है कि हम कोऑपरेटिव संघवाद के रास्ते पर चल रहे हैं। तब यह न सिर्फ आवश्यक प्रतीत होता है बल्कि उसे शक के दायरे में भी खड़ा करता है। वास्तव में केंद्र सरकार अपनी कुछ अलोकतांत्रिक हरकतों को छुपाने के लिए ऐसे प्रोपगंडे क्या प्रयोग करती है। यह पुनः संघवाद जो कि लोकतंत्र का अटूट हिस्सा है को कमजोर करती है सरकार को संविधान सम्मत कार्य करने तथा इस तरह के बयानबाजी से बाज आना चाहिए तभी हमारा संघवाद जिसमें राज्यों को तथा विभिन्न अन्य निकायों को शक्तियां मिली है उन शक्तियों का पालन करने में तत्पर रहे तथा लोगों के बेहतरी के लिए एक कल्याणकारी राज्य की भूमि तैयार हो।

लोकतांत्रिक संस्थाओं का अवमूल्यन

लोकतांत्रिक सरकारें वस्तुतः लोकतंत्र की मजबूती प्रदान करती हैं उन संस्थाओं के द्वारा जो संविधान में तथा

विधायिका ने बनाए हैं लोकतंत्र बिना किसी क्षति के चलता रहे यह सुनिश्चित करती है लोकतंत्र के बीच की दूरी को कम करने में इसकी अहम् भूमिका होती है। परंतु कुछ विगत वर्षों में देखा जा गया है कि केंद्र सरकार ऐसी संस्थाओं पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर अपनी इच्छा निरूपित से काम करवा रही हैं। मीडिया की सुर्खियों में भी इस तरह की खबरें देखी जा सकती हैं। ऐसा करने से न सिर्फ सरकारी संस्थाओं का अवमूल्यन है बल्कि लोकतंत्र का वजूद खत्म होने का खतरा भी मंडरा रहा होता है।

मीडिया की भूमिका

भारत जैसे लोकतंत्र देशों में मीडिया की आम भूमिका होती है। यह विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के कार्यकलापों पर नजर रखती है इसलिए इसे प्रजातंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में भी जाना जाता है। 18वीं शताब्दी से लेकर आज तक विशेष रूप से अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन वह फ्रांसीसी क्रांति के काल में मीडिया ने जनता को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सच पूछा जाए तो यह व्यक्ति समूह संस्था समाज के सभी वर्गों को जागरूक बनाती है। किसी भी देश सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति को मजबूती प्रदान करती है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य के आलोक में इसकी महत्ता और उपयोगिता लगातार बढ़ती ही जा रही है। कोई भी सरकार समाज संस्था समूह आदि घटक इसकी उपेक्षा कर अपना विकास नहीं कर सकता। यही कारण है लगभग हर सरकार इस मीडिया रूपी शक्ति पर अपना नियंत्रण स्थापित करना चाहती है। और फिर राजनीतिक सच्चाई को तस्वीर वह अपने हिसाब से लोगों तक पहुंच आती रहती है। समग्र रूप से हम मीडिया को विभिन्न रूपों में देखते हैं जैसे प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, रेडियो, सिनेमा, इंटरनेट, सोशल मीडिया इत्यादि इन तमाम रूपों में मीडिया प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना प्रभाव होता है। इसका प्रभाव जनता की निर्भीकता उसकी जागरूकता भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज भ्रष्टाचार और भ्रष्ट नेताओं लोगों को उजागर करने के रूप में वह सत्ता पर सार्थक नियंत्रण करने तथा रखने में होता है। आज के हालात में उग्र भीड़ धार्मिक उन्माद गैर विवेकशील वर्ग समूह आदि को मीडिया खासकर सोशल मीडिया के साथ जोड़ कर नहीं देख सकते हैं। यह तो मीडिया का दुरुपयोग हुआ। सही तस्वीर सामने आती है जब हम इसका प्रयोग समाज के निर्माण में सामाजिक वर्गों समूहों के चरित्र निर्माण में प्रजातंत्र की जड़ों को और भी मजबूत बनाने में इसका प्रयोग करें। तब हम मीडिया और उसके प्रयोग दोनों को उत्तरदायी बना सकते हैं जब समाज के ताने-बाने में एक जागरूक और सब लोग सम्मिलित हो सकेंगे।

वर्तमान दशक पर विहंगम दृष्टि दुखद सत्य की ओर हमें ले जाते हैं। मीडिया की भूमिका दुर्भावना से लेकर व्यक्तिगत और संस्थागत नीजी स्वार्थों की पूर्ति के साथ दंगे भड़काने तक रहा है। इसकी भूमिका हास्यास्पद से बढ़कर भयावह तब हो जाती है जब यह अनावश्यक रूप से सत्ता पक्ष को महिमामंडित करने लगता है। यह तथ्यों को तोड़ मरोड़कर पेश करने लगता है। समाचार मूल्यों की बात छोड़ दें यह समाचार को ही पुनः परिभाषित करने लगता है।

ऐसी स्थिति में सामाजिक राजनीतिक स्थिति से संदेह उत्पन्न होने लगता है। जनता जनार्दन तक देश की सही तस्वीर नहीं पहुंच पाती है। फलता समाज में असंतुलन पैदा हो जाता है। आज इंटरनेट जैसे विशेष विधा ने हमें सूचना विस्फोट काल अवश्य पहुंचाया है। परंतु यह सूचना कितना कारगर है कहना मुश्किल होगा। पश्चिमी सभ्यता का प्रचार प्रसार तो किया ही है हमारी अपनी सभ्यता का क्षरण भी किया है। इस वजह से और समाज में सभ्यता चरित्र और मूल्यवान संस्कृति का लगातार ह्रास दिख रहा है खासकर युवा पीढ़ी जो इंटरनेट के बिना एक पल भी नहीं रह सकते उनके बीच नैतिकता की कमी और अपनी संस्कृति से बिल गांव देखने को युवा पीढ़ी की संख्या हमारे देश में सर्वाधिक है। यह सच है नेट की दुनिया से हम अलग नहीं रह सकते इसके दुष्परिणामों का झेलना कितना कष्टकर होगा।

निष्कर्ष

यह सच है कि मीडिया की भूमिका सशक्त होती है लेकिन सकारात्मक होती है। इसकी कई आवश्यक शर्तें हैं। मीडिया समाज को अनेक प्रकारों से विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान करता है। इसकी भूमिका प्रेरणादायक होती है और लोगों को प्रभावित करती है। यही कारण है कि मीडिया आज के समय में एक माहौल तैयार करती है। प्रेरक सूचनाएं अनेक लोगों को प्रेरणास्रोत बनाकर एक सक्षम नेतृत्व का निर्माण करता है। भ्रष्ट और चरित्रवान

लोग इससे भयभीत होते हैं। लोगों के बीच सामाजिक समरसता और आपसी सरोकार में वृद्धि होती है। समाज और भी मजबूत बनता है और लोकतंत्र भी फलता-फूलता है इस तरह इस तरह मीडिया की भूमिका बहुआयामी हो जाती है जो विनाश व विकास दोनों की भूमिका निभाता है। आवश्यकता है इसे उन्मुक्त कर सत्ता के बंधन से मुक्त कर लोकतंत्र के तीनों स्तंभों के साथ-साथ इसे भी मजबूत बनाया जाए तभी लोकतंत्र का चौथा स्तंभ अपनी सार्थक भूमिका निभाते हुए लोकतंत्र की तमाम चुनौतियों को समाप्त या कम करने में सफल हो सकेगा।

लोकतंत्र मजबूत तभी हो सकता है जब मीडिया अपनी भूमिका बखूबी निभाए क्योंकि सरकारे चाहे जिस भी पार्टी की बने सभी अपने फायदे के लिए तथा लोगों को प्रभावित करने के प्रयास में लगे रहते हैं। सत्ता प्राप्ति के लिए तथा लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए मीडिया एक उत्प्रेरक का काम करता है। मीडिया सत्ता प्राप्त करने का साधन मात्र न बनकर लोगों को सही जानकारियां जानकारियां उपलब्ध कराना भी है। इसलिए जनतंत्र की मजबूती के लिए एक मजबूत विपक्ष की जरूरत होती है उसी तरह एक मजबूत मीडिया जो स्वतंत्र एवं निष्पक्ष हो इसकी भी आवश्यकता है।

एसोसिएट प्रोफेसर,
श्याम लाल कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सन्दर्भ सूची

1. मीडिया और लोकतंत्र, रविंद्र मिश्रा, वाणी प्रकाशन, 2014
2. वैकल्पिक मीडिया लोकतंत्र और नाम चोम्स्की, जगदीश्वर चतुर्वेदी, सुधा सिंह, नई दिल्ली, अनामिका प्रकाशन, 2008
3. मॉडर्न मीडिया, इलेक्शंस एंड डेमोक्रेसी, भीमैया कृष्णन रवि, सेज पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, 2017
4. मीडिया, फ्रीडम एंड डेमोक्रेसी, दिव्यांशु कुमार, 2018
5. मीडिया एंड डेमोक्रेसी, जेम्स कुर्रन, रोडलेज प्रकाशन, 2011